Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-179-182

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 179-182

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

सुफिया खातून
शोधार्थी,
हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

Corresponding Author :
सुफिया खातून
शोधार्थी,
हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

ग़ज़ल : स्वरुप –संरचना, परम्परा तथा विकास – विस्तार

साहित्य मनुष्य के विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं को व्यक्त करने का प्रमुख साधन रहा है। संवेदना से उठने वाली भावनाओं को जब लयबद्ध शब्दों में पिरोया गया तो काव्य की विभिन्न विधाओं का विकास हुआ। "हिंदी साहित्य का इतिहास" इस बात का साक्षी है कि हिंदी में अनेक विधाओं का समावेश तथा पोषण हुआ। इन्ही विधाओं में से एक महत्वपूर्ण विधा है 'ग़ज़ल' जो अपने विशिष्ठ नियमों, शिल्प और सौंदर्य के कारण साहित्य में एक विशेष स्थान रखती है। ग़ज़ल केवल एक काव्य विधा नहीं है, बल्कि विचारों और भावनाओं का ऐसा प्रतीक है, जो श्रोताओं और पाठकों के मन को गहराई से छूता है। वैसे तो भारतीय परिवेश में काव्य- कला के माध्यम से छंद मुक्त कविता, गीत, नवगीत, हाईकु आदि विधाएं में रचनाएं हो रही है परन्तु ग़ज़ल अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। साहित्यिक केंद्रों पर इसका विकास एवं परिष्कार हुआ। हिंदी में यह परम्परा 13वीं शताब्दी से स्फूट रूप में विकसित होती आ रही है। गागर में सागर भरने की क्षमता के कारण ग़ज़ल विधा आज तेजी से लोकप्रियता पा रही है और हिंदी साहित्य में ग़ज़ल ने नई ऊंचाइयों को छुआ। ग़ज़ल के शाब्दिक अर्थ के सम्बन्ध में विचार करे तो इसमें मतभेद है। ग़ज़ल आरबी भाषा का शब्द है। –कुछ विद्वान ग़ज़ल का सम्बन्ध अरबी के ही अन्य शब्द ग़ज़ाल से मानते है, जिसका अर्थ है 'मृग'। अतः यह हो सकता है कि हिरन जैसे नेत्रों वाली सुंदरियों के सम्बन्ध में लिखी गई छंदोमय प्रेम कविताएं ही ग़ज़ल की संज्ञा से अभिहित की जाने लगी हो, परन्तु ग़ज़ल की व्युत्पत्ति विषयक सम्बन्ध ग़ज़ल या मृग से जोड़ना समीचीन प्रतीत होता है, क्योंकि भारत में मृग के नेत्र सुन्दरता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अवश्य ही दिखाई देते हैं।[1]

स्वरुप : ग़ज़ल मूलतः श्रृंगार, विरह और प्रेम-भावना की अभिव्यक्ति थी, परन्तु कालांतर में इसमें सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक विषय भी शामिल हुए। यह शेरों (दोहों जैसे दो पंक्तियों वाले पद्यांस) से निर्मित होती है। प्रत्येक शेर स्वतंत्र अर्थ रखता है, किन्तु संपूर्ण ग़ज़ल में एक भाव-सूत्र दिखाई देता है। इसमें संक्षिप्तता, प्रतीकात्मकता, लय और संगीतात्मकता प्रमुख गुण माने जाते हैं। यद्यपि –ग़ज़ल न केवल प्रेमाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, अपितु वह तीव्रानुभूति की संप्रेषणीयता में सहायक भी है। शिल्प की दृष्टि से वह न केवल अग्रेंजी, साहित्य में प्रयुक्त मैड्रिगाल एवं सानेट छंदों के समीप है, अपितु हिंदी

गीतिका से भी उसका निकट का सम्बन्ध है।[2]

संरचना : हिंदी में ग़ज़ल का आगमन उर्दू साहित्य के प्रभाव से हुआ। हिंदी ग़ज़ल की संरचना में पारंपरिक तत्वों की उपस्थिति के साथ-साथ आधुनिक प्रयोग भी होते आएं हैं- ग़ज़ल से संरचनात्मक स्वरूप को समझने के लिए इसे दो भागों में विभक्त कर सकते हैं।

1) बाह्य संरचना :

- **शेर-** ग़ज़ल में 5 या अधिक शेर होते हैं। शेरों की संख्या निश्चित रूप में नहीं होती, बल्कि आम तौर पर 5 से 11 शेरों की ग़ज़लों को अच्छा माना जाता है। एक ग़ज़ल के सभी शेर एक लय में होते हैं। प्रत्येक शेर दो मिसरों से मिलकर बना होता है। शेर कि प्रथम पंक्ति को मिसरा-ए-ऊला और दूसरी पंक्ति को मिसरा-ए-सानी कहते हैं।
- **बहर-** ग़ज़ल की एक विशिष्ट लयात्मकता होती है जिसे 'बहर' कहा जाता है। प्रत्येक शेर एक ही बहर में होता है। हिंदी में बहरों का निर्वाह आवश्यक होता है यद्यपि कभी-कभी छूट भी ली जाती है। –फिर भी बहर छंद/लय, काफिया और रदीफ़ की हदों में रहते हुए इन्ही दो मिसरे में अपनी बात कहनी होती है, चाहे वह तीन चार हजार सदियों का अफसाना हो या एक लम्हें का।[3] बहर-ए-हजज, बहर-ए-रामल, बहर-ए-मुतकारिब आदि बहर से ग़ज़ल पूर्ण होते हैं।
- **रदीफ-** हर शेर कि दूसरी पंक्ति के अंत में आने वाला एक समान शब्द समूह रदीफ़ कहलाता है। यह (रदीफ) अरबी भाषा के शब्द हैं। अर्थ की दृष्टि से इसका अर्थ होता है 'पीछे चलने वाली', ग़ज़ल में काफिया के बाद आने वाली शब्द या समूह होता है। –आकर के आधार पर छोटी रदीफ़, मझली रदीफ़, लंबी रदीफ़ जैसे वर्गीकरण भी देखने को मिलते हैं। खूबसूरत और बमानी रदीफ ग़ज़ल की खूबसूरती में इजाफा करती हैं।

उदाहरणार्थ-

आपको चाहिए एक उम्र असर होने तक।
कौन जीता है तेरी जुल्फ के सर होने तक।
हमने माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन
खाक हो जाएंगे हम तुमको ख़बर होने तक।[4]

- **काफिया-** शायरी का एक महत्वपूर्ण शिल्प तत्व है। यह काव्य रचना में तुकबंदी से जुड़ा हुआ होता है और ग़ज़ल के हर शहर के दूसरे मिसरे (पंक्ति) में रदीफ से ठीक पहले आने वाले समान ध्वनि वाले शब्दों को कहा जाता है। काफिया में शब्द अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन उनमें ध्वनि की समानता होती है। –शम्सुर्रहमान फारूकी के अनुसार- "शेर में कोई लफ़्ज़ बल्कि कोई हर्फ बेकार न होना चाहिए। लिहाजा काफिया या रदीफ या दोनों पूरी तरह कारगर नहीं है तो शेर के मानी को सदमा पहुंचना लाजमी है।"

उदाहरणार्थ-

मजे जहां के अपनी नजर में खाक नहीं
शिवाय खूनी जिगर, सो जिगर में खाक नहीं।[5]

- **मतला-** मतला का शाब्दिक अर्थ 'उदय' है। ग़ज़ल या कसीदे के शुरु के उसे शेर को या एकाधिक शेरों को कहते हैं जिसमें रदीफ एवं काफिया एक ही होता है। मतला एक ग़ज़ल में एक भी हो सकता है या पूरी की पूरी ग़ज़ल भी कभी-कभी मतलों में ही कह दी जाती है।[6] जैसे-

तुम भी रहने लगे खफा साहब
कहीं साया मिरा पड़ा साहब।[7]

- **मकता-** मकता का मतलब अरबी में 'कटा हुआ' और तुर्की में 'आखरी दाना' होता है और यह इस बात का घोतक है की ग़ज़ल में मकता कहें या आखरी शेर बात एक ही है।[8]

2) आंतरिक संरचना : ग़ज़ल एक बेहद सुंदर, भावपूर्ण और शिल्पगत दृष्टि से समृद्ध काव्य विधा है, इसमें कई सौंदर्य शास्त्रीय और कलात्मक तत्व होते हैं जो इसकी आत्मा को गहराई देते हैं जैसे-

- **तख्ययुल (कल्पनाशक्ति)-** तख्ययुल का अर्थ है रचनाकार की कल्पना शक्ति। ग़ज़ल में जब शेयर अपने अनुभव भावनाओं या विचारों को किसी विशेष कल्पनाशील ढंग से प्रस्तुत करता है तो वह तख्ययुल कहलाता है। जैसे-

इक खुमारी रात की आंखों में भरता देखकर
हंस पड़ा है चांद भी तारों को हंसता देखकर।[9]

यहां भाव तो 'विरह' का है, लेकिन उसे एक कल्पनात्मक दृश्य में बदल दिया गया है।

- **हुस्न-ए-बयां (अभिव्यक्ति की सुंदरता)-** हुस्न-ए-बयां का अर्थ है शेर की अभिव्यक्ति या प्रस्तुति का सौंदर्य। जब कोई बात शब्दों के चयन, शैली और प्रवाह के माध्यम से अत्यंत सुंदर, आकर्षक और प्रभावशाली ढंग से कही जाती है तो उसे हुस्न-ए-बयां कहते हैं। जैसे-

"दिल में रख कर दर्द का बहता इक दरिया
कहती है कुछ बात सिसकने वाली वह"[10]

यहां भाव सरल है, लेकिन अभिव्यक्ति की कोमलता व्यंग्य और पीड़ा का संगम हुस्न-ए-बयां को दर्शाता है।

- **शेरीयत (शेरीयत की आत्मा)-** शेरीयत से आशय है कि शेर में कितनी काव्यात्मकता गहराई और सौंदर्य है। कोई शेर कितना प्रभावशाली, अर्थगर्भित और आत्मा को छूने वाली है यही उसकी शेरीयत होती है। जैसे-

ना कोई गम कोई रंजिश न तन्हाई रहे दिल में
कहीं से आज उल्फत का खजाना ढूंढ लाना तुम।[11]

यहां शेर जीवन, अकेलेपन और प्रश्नवाचकता को गहराई से दर्शाता है, यही इसकी शेरीयत है।

- **तग़ज़्ज़ुल (कोमलता, मोहब्बत और नजाकत)-** तग़ाज़्ज़ुल का संबंध ग़ज़ल के भाव में नजाकत, नर्मी, कोमलता और प्रेम-भावना से है। ग़ज़ल में जब नर्मी से दिल की बात इशारों में कही जाती है, जब भाषा में लचक और मिठास होती है, तो उसे तग़ाज़्ज़ुल कहते हैं। जैसे-

जब जब जिगर में मेरे उनका ख्याल आया
चटकी चमन की कलियां, रंग और लाल आया।[12]

इसमें प्रेम और कोमलता का मिला-जुला भाव है जो तग़ाज़्ज़ुल को दर्शाता है। अतः संरचना की दृष्टि से यह कहा जा सकता है की ग़ज़ल अनुशासन और सौंदर्य का संगम है।

परंपरा : किसी भी साहित्यिक विधा का उदय अनायास और किसी व्यक्ति विशेष की सार्थक व रचनात्मक पहलकदमी का नतीजा भर नहीं होता चाहे वह व्यक्ति कितना ही अधिक प्रतिभाशाली और शक्ति संपन्न क्यों ना हो, बल्कि उसका उदय एक समय की सामाजिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों और आवश्यकताओं के तहत होता है।[13]

अरबी में ग़ज़ल परंपरा : अरबी ग़ज़ल परंपरा का उद्भव प्राचीन अरबी समाज के प्रेम भावात्मक अनुभवों से हुआ। साहित्य में अनेक विधाओं का जन्म हुआ जिसमें ग़ज़ल की उत्पत्ति का मूल स्थल अरबी साहित्य है जहां ग़ज़ल का जन्म अरबी भाषा और साहित्य की गोद में हुआ। इसका प्रारंभ 7वीं, 8वीं शताब्दी के आस-पास हुआ जब इस्लाम अपने प्रारंभिक चरण में था और कविता को सामाजिक तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना जाता था। अरबी ग़ज़ल पर सूफी संतों का भी गहरा प्रभाव पड़ा। अरबी ग़ज़ल परंपरा का उद्भव प्राचीन अरबी समाज के प्रेम-भावनात्मक अनुभवों से हुआ और यह एक ऐसी विधा है जिसने मनुष्य के हृदय, आत्मा और संवेदना को स्वर दिया। यह अपनी संक्षिप्तता, गहनता और प्रतीकात्मकता को अपनाकर पूरे विश्व साहित्य को प्रेरित किया। यह परंपरा ग़ज़ल की नींव बनी जिस पर फ़ारसी, उर्दू और हिंदी ग़ज़ल का भव्य भवन निर्मित हुआ।

फ़ारसी में ग़ज़ल परंपरा : फ़ारसी भाषा ही वह धरातल है, जहां ग़ज़ल को उसकी कविता- विधा के रुप में पूर्ण परिपक्वता प्राप्त हुईं। ग़ज़ल का अरबी से फ़ारसी में प्रवेश होने के कई कारण है जैसे अरब विजेताओं और सूफी संतों के माध्यम से यह ईरान (फारस) पहुंचीं। फ़ारसी कवियों ने अरबी ग़ज़ल की संरचना, भाषा और सौंदर्य को अपनाकर उसे नए स्तर पर विकसित किया। फ़ारसी ग़ज़ल की यह समृद्ध परंपरा बाद में तुर्की, उर्दू और हिंदी साहित्य पर भी गहरा प्रभाव डालती है, जिससे ग़ज़ल विश्व साहित्य की एक वैश्विक विधा बन सकी।

उर्दू ग़ज़ल की परंपरा : मध्यकालीन भारत में मुस्लिम शासकों के आगमन के साथ ही अरबी, फ़ारसी और तुर्की भाषाओं का प्रभाव भारतीय जनभाषाओं के पारस्परिक संपर्क और समन्वय से 'उर्दू' भाषा का विकास हुआ, और इसी के साथ उर्दू ग़ज़ल की परंपरा ने भी आकार लेना प्रारंभ किया।

समकालीन गजलकारों ने पारंपरिक भावभूमि को समसामयिक संदर्भों से जोड़ते हुए उर्दू ग़ज़ल को नयी अर्थकता प्रदान की है। डॉ मुनव्वर राणा, डॉ वसीम बरेलवी, डॉ राहत इंदौरी, गुलज़ार देहलवी, अशोक साहिल, फैजान अहमद, मंजर भोपाली आदि समकालीन गजलकारों ने इस परंपरा को नई ऊंचाइयां प्रदान की और ग़ज़ल को एक वैश्विक और संवेदनशील साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित किया है।

हिंदी में ग़ज़ल परंपरा : साहित्य भाषा जो भारत की सबसे व्यापक रुप में बोली जाने वाली भाषा है, ने अपने लचीलेपन, जन संवेदना और भाव समृद्धि के कारण ग़ज़ल को अपनाया और उसने स्थानीयता, संस्कृति और जन जीवन के विविध रंग भर दिए।

आज हिंदी ग़ज़ल अपने शिल्प और विषय वस्तु में उर्दू ग़ज़ल से भिन्न एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा के रुप में स्थापित है। एक आलोचक का कथन है- मैं हिंदी ग़ज़ल उसे कहना चाहूंगा जिसमें भारत की आत्मा अभिव्यक्त हुई हो। भारत की आत्मा के उर्दू और

हिंदी का मुहावरेदार भाषा में नहीं है। मैं बुद्ध, महावीर, गीता, उपनिषद, वैष्णव, दर्शन का चिंतन यहां के खेतों-खलिहानों, पनघटों की सुगंध और सरसता जिन ग़ज़लों में विद्यमान हो, मैं उन्हें हिंदी ग़ज़ल कहना चाहूंगा।[14]

विकास यात्रा : अमीर खुसरो का साहित्य हिंदी ग़ज़ल की विकास की आधार भूमि माना जाता है। खुसरो की गजलें आज भी हिंदी ग़ज़ल परंपरा के लिए मार्गदर्शन सिद्ध होती है।

ग़ज़ल का विकास चरणबद्ध रुप में देखा जा सकता है। प्रारंभ में ग़ज़ल प्रेम और श्रृंगार तक सीमित रहती है। इसके बाद इसमें सूफी भाव धारा और ईश्वर के प्रति प्रेम अभिव्यक्त हुआ। आगे चलकर ग़ज़ल में सामाजिक चेतना और यथार्थ का स्वर मूखर हुआ। उनके पश्चात कबीर प्यारेलाल सोखी और अन्य कवियों ने हिंदी ग़ज़ल को नया स्वर और चेतना से संपन्न किया। आधुनिक युग में बाबू हरिशंकर प्रसाद एवं अन्य कवियों ने पुनः इस विधा को गति प्रदान की। द्विवेदी युग में जयशंकर प्रसाद ने विशुद्ध हिंदी में ग़ज़ल को प्रस्तुत कर इसके स्वरुप को समृद्ध किया। छायावादी काल में निराला ने इसे नई दिशा प्रदान की और हिंदी ग़ज़ल को आम आदमी के जीवन से जोड़ने का प्रयास किया। प्रगतिवाद के दौर में यह ग़ज़ल सामाजिक यथार्थ का प्रखर माध्यम बनी। इसी कड़ी में प्रयोगवादी कवियों के योगदान से हिंदी ग़ज़ल और भी जीवंत हो उठी।

दुष्यंत कुमार की गजलों में जनता की आवाज और संघर्ष झलकती है। आज ग़ज़लमंचों, पत्रिकाओं फिल्म और गायक सम्मेलनों के माध्यम से ग़ज़ल लोकप्रियता की ऊंचाइयों पर है। उन्होंने ग़ज़ल को देवनागरी लिपि और शुद्ध हिंदी मुहावरे से जोड़कर इसे आम पाठक के निकट ला दिया। उनके पश्चात ग़ज़ल की परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाने वाले रचनाकारों की एक लंबी श्रृंखला रही- निरंकारदेव सेवक, रामावतार चेतन, चंद्रसेन विराट, भवानीशंकर, जहीर कुरैशी, कुंवर, बेचैन, डॉ भावना, विनय कुमार शुक्ल, आरती देवी, वशिष्ट अनूप, हरेराम समीप आदि जिनके कारण हिंदी ग़ज़ल आज अपनी सशक्त पहचान बना सकी है।

संदर्भ-सूची :

1. हिंदी गजल उद्भव और विकास, रोहिताश्व अस्थाना, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, वर्ष 2017, पृष्ठ 22
2. वही, पृष्ठ 27
3. हिंदी गजल के इमकान, ए.एफ. 'नज़र', किताबगंज प्रकाशन, राजस्थान, वर्ष 2021, पृष्ठ 16
4. वही, पृष्ठ 17
5. हिंदी गजल उद्भव और विकास, रोहिताश्व अस्थाना, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, वर्ष 2017, पृष्ठ 127
6. ग़ज़ल ऐसे लिखे, डॉ ललित कुमार सिंह, सबद प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 2013, पृष्ठ 26
7. वही, पृष्ठ 27
8. हिंदी ग़ज़ल दिशा और दशा, संपादक: विनय कुमार शुक्ल, आरती देवी, श्वेतवर्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2024, पृष्ठ 34
9. चुने हुए शेर डॉ भावना, संपादक: हरेराम समीप, लिटिल बर्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली, वर्ष 2025, पृष्ठ 90
10. शब्दों की कीमत, डॉ भावना, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, वर्ष 2019, पृष्ठ 36
11. धुंध में धूप, डॉ भावना, बोधि प्रकाशन, जयपुर, वर्ष 2023, पृष्ठ 51
12. डॉ भावना के चुनिंदा अशआर, संपादक: विजय कुमार, श्वेतवर्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2024, पृष्ठ 30
13. अष्टछाप, संपादन: नचिकेता, वर्ष 2016, पृष्ठ 7
14. हिंदी ग़ज़ल का परिदृश्य, डॉ मधु खराटे, विद्या प्रकाशन, कानपुर, वर्ष 2018, पृष्ठ 62

•